शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का अध्ययन

पी.एच.डी. (शिक्षा शास्त्र) उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा

शोधार्थी

देश दीपक

शोध निर्देशिका

डॉ. नेहा जैन

पैडागोजिकल साइंसेस, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

2023

प्रस्तावना

मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है, जो अपने साथ कुछ जन्मजात शक्तियां लेकर पैदा होता है। शिक्षा के द्वारा मानव की इन जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में वांछित परिवर्तन किया जाता है, जिससे वह एक सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बन सके। यह कार्य मानव के जन्म से ही उसके परिवार द्वारा अनौपचारिक रूप से, तत्पश्चात विद्यालय में औपचारिक रूप से प्रारंभ कर दिया जाता है। सीखने-सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी जीवन पर्यन्त चलता रहता है। वास्तविक अर्थ में किसी समाज में चलने वाली सीखने-सिखाने की सहप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है। जॉन डीवी (1918) के अनुसार, "शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है, जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रखने तथा अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने का सामर्थ्य प्रदान करें।" महात्मा गांधी जी के अनुसार, "शिक्षा से अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण से है।" इसी क्रम में मनोवैज्ञानिक ब्लूम द्वारा (1956) में संपूर्ण मानव व्यवहार के तीन पक्षों संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक कार्य क्षेत्रों के आधार पर विभाजित किया गया है। जिसमें विशेषकर संज्ञानात्मक कार्य क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। संज्ञानात्मक कार्य क्षेत्र में छः स्तर शामिल है, जो निम्न प्रकार है - ज्ञान, बोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन यह सभी स्तर निम्न से उच्च क्रम में व्यवस्थित है, तथा उच्च क्रम मूल्यांकन कौशल पर आधारित है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों में गहन सोच (आलोचनात्मक चिंतन) का विकास होता है, जो कि छात्रों को स्वतंत्र निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है। छात्रों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास तभी संभव है, जब उनके शिक्षकों में यह क्षमता पहले से विकसित हो इसलिए जो शिक्षक शिक्षा क्षेत्र में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी है उनमें यह क्षमता हमें प्रशिक्षण के दौरान ही विकसित करनी चाहिए, जिससे वह भविष्य में अपने छात्रों में इन क्षमताओं का विकास कर सकें। शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी, शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों की

भूमिका का निर्वहन करते हैं। अतः शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्वतंत्र निर्णय लेने का कौशल भविष्यगत सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इन्हीं निर्णयों के माध्यम से वह अपने व्यक्तिगत, शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र से संबंधित भविष्य के लिए सही का चुनाव कर समस्याओं के हल में सही निर्णय ले सकेंगे।

किसी व्यक्ति द्वारा निर्णय लेने का कौशल दो या दो से अधिक विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनने की क्षमता को दर्शाता है। इसी संदर्भ में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष व्यक्तिगत जीवन तथा व्यवसायिक जीवन दोनों ही पक्षों में ऐसे अनेकों प्रश्न होते हैं जिनका सही और प्रभावी समाधान उनकी निर्णय लेने की क्षमता पर आधारित होता है। शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की निर्णय क्षमता उनके स्व नियंत्रण (विनियमय) को दर्शाती है। स्व विनियमन ऐसा विनियमन है जिसके द्वारा शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी स्वयं की ऊर्जा की स्थिति, भावनाओं, विचारों तथा प्रबंधन करने की क्षमता की पहचान कर और भी उचित निर्णय ले सकते हैं ।

गुड थेरेपी ऑर्गेनाइजेशन एंडिया (2016) के अनुसार, “स्व विनियमन, स्व नियंत्रण है।” स्व विनियमन सचेत व्यक्तिगत प्रबंधन की एक प्रणाली है जिसमे लक्ष्य तक पहुँचने के लिए स्वयं के विचारों, व्यवहारों और भावनाओं का मार्गदर्शन करने की प्रक्रिया है। कई शोध मनोवैज्ञानिकों, वैज्ञानिकों और अन्य शोधकर्ता के द्वारा स्व विनियमन प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जा चुका है। अल्बर्ट बंडूरा (1963) ने संज्ञानात्मक, मनोवैज्ञानिक व्यवहार के अधिग्रहण पर ध्यान केंद्रित करने में स्व विनियमन की अहम भूमिका बताई। जिसके आधार पर सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत और सामाजिक शिक्षण सिद्धांत का जन्म हुआ। उन्होंने व्यवहारिक और संज्ञानात्मक घटकों को साथ लाकर यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य स्व विनियमन के रूप में की जाने वाली प्रक्रिया के माध्यम से अपने व्यवहार को नियंत्रित करने में सक्षम है। स्व विनियमन लक्ष्य निर्धारण की दिशा में काम करने के लिए व्यक्ति को सूचित करने, प्रेरित करने और व्यवहार परिवर्तनों से प्रभावित होने के लिए अपने स्वयं के विचारों और भावनाओं का आंकलन करने वाली प्रक्रिया

है। लेव वाइगोत्सकी (1934) रूसी मनोवैज्ञानिक का मानना था, कि स्व विनियमन में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का समन्वय शामिल है, जैसे- योजना बनाना, संश्लेषण करना, और अवधारणा को तैयार करना। स्व विनियमन के द्वारा शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के अधिगम में उत्कृष्टता आने की संभावना प्रबल हो जाती है। स्व विनियमन अधिगम कौशल ऐसा कौशल है, जिसमें शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों द्वारा स्वयं सीखने और व्यवहारों को नियंत्रित करने और मूल्यांकन करने का कौशल सम्मिलित है। स्व विनियमित अधिगम कौशल एक मानसिक क्षमता या अकादमिक प्रदर्शन कौशल नहीं है बल्कि स्व निर्देशन प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षार्थी अपनी मानसिक क्षमताओं को शैक्षिक कौशल में बदलते हैं। जिम्मरमैन बीजे (2002) के अनुसार, "स्व विनियमित अधिगम कोई विशेषता नहीं है जो कुछ छात्रों में होती है और अन्य में नहीं होती जबकि इसमें विशिष्ट प्रक्रियाओं का चयनात्मक उपयोग शामिल है, जिसे प्रत्येक सीखने के कार्य के लिए व्यक्तिगत रूप से अनुकूलित किया जाना चाहिए।"

स्व विनियमित अधिगम लक्ष्य निर्धारित करने, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रणनीतियों का चयन करने, प्रगति की जाँच करने तथा जो सीखा है उसका मूल्यांकन करना है। स्व विनियमित अधिगम कौशल के अंतर्गत शिक्षार्थी की स्व जागरूकता, स्व योजनीकरण, स्व प्रेरणा सम्मिलित है। जिनके आधार पर शिक्षार्थी स्वयं पर नियंत्रण करते हुए अपने ध्यान को केंद्रित रखकर लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कार्य करता है इसके अतिरिक्त उसके द्वारा बनाए गए लक्ष्य को किस स्तर तक पूरा किया जा चुका है इसका मूल्यांकन भी वह स्वयं करता है। यदि वह लक्ष्य पूर्ण हो जाते हैं, तो वह दूसरे लक्ष्य की ओर उन्मुख होता है, परंतु यदि वह लक्ष्य पूर्ण नहीं हुए हैं तो वह संशोधन करके पुनः इस चक्र को दोहराता है।

अतः स्व विनियमित अधिगम कौशल एक अतिव्यापक शब्द है, जो यह बताता है कि विद्यार्थी अपने सीखने, लक्ष्य की दिशा में काम करने और प्रदर्शन का मूल्यांकन कैसे करते हैं। स्व विनियमित रूप से सीखने का विषय संज्ञानात्मक

रणनीतियों पर आधारित है। जिसमें स्मृति-पूर्वाभ्यास (Memory Rehersal), कल्पना, विस्तार आदि शामिल है। जिम्मरमैन और मार्टिन पोज (1989) "अभिज्ञान रणनीतियों (Recognition Strategies) में विशेषकर योजना बनाना, कार्य निगरानी करना और विनिमय शामिल है, सबसे महत्वपूर्ण रणनीति कार्य विश्लेषण और लक्ष्य निर्धारण है।" पिंटरिच और ग्रोट (1990) के अनुसार, संसाधन प्रबंधन रणनीतियों में आमतौर पर अध्ययन, पर्यावरण, समय शामिल है। इसमें विद्यार्थी वातावरण को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं। रिचर्डसन एट अल (2012) के अनुसार, "जो विद्यार्थी स्व विनियमित अधिगम कौशल का अभ्यास करते हैं, वह अपने शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं।"

शैक्षिक प्रदर्शन का अर्थ है, विद्यार्थियों के समग्र विषयों में प्रदर्शन। शैक्षिक प्रदर्शन विभिन्न विषयों में विद्यार्थी की उपलब्धि की माप है। शिक्षक आमतौर पर विद्यार्थियों की कक्षा के प्रदर्शन और मानकीकृत परीक्षण के परिणामों का उपयोग करके उपलब्धि को मापते हैं। रोनो (2013) के अनुसार, "शैक्षिक प्रदर्शन वह केंद्र माना जाता है, जिसके चारों ओर पूरी शिक्षा प्रणाली घूमती है।" इसी क्रम में नारद अब्दुल्ला (2016) के अनुसार, "छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन किसी भी शैक्षणिक संस्थान की सफलता या विफलता को निर्धारित करता है।" इसी संदर्भ में सिंह मलिक और सिंह (2016) ने यह भी तर्क दिया कि छात्रों की शैक्षिक प्रदर्शन का किसी देश के सामाजिक-आर्थिक विकास पर सीधा प्रभाव पड़ता है। नारद और अब्दुल्ला (2016) के अनुसार, "शैक्षिक प्रदर्शन का अर्थ है, शिक्षकों द्वारा निर्धारित शैक्षिक लक्ष्य को एक विशिष्ट अवधि में प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन किया जाता है।" जिससे उन्हें यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उन्हें शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति किस सीमा तक प्राप्त हुई है। शैक्षिक प्रदर्शन एक सीमित समय में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए कुछ निश्चित लक्ष्यो के स्तर को बताता है। विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन केवल शिक्षकों और शिक्षण संस्थाओं पर ही आधारित नहीं है वरन इस बात पर सबसे अधिक आधारित है, कि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कितना प्रेरित है विद्यार्थियों की वह प्रेरणा जो वह अपनी उपलब्धि के लिए दर्शाता है, उपलब्धि प्रेरणा कहलाती है। उपलब्धि

प्रेरणा से तात्पर्य है, कि विद्यार्थियों के द्वारा अपनी पूर्ण क्षमता व ऊर्जा का प्रयोग करके किसी निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना । उपलब्धि प्रेरणा को उपलब्धि और प्रेरणा शब्दों में स्वतंत्र रूप से विचार करके परिभाषित किया जा सकता है। उपलब्धि का तात्पर्य सफलता की स्थिति या गुणवत्ता से है तथा प्रेरणा का तात्पर्य व्यवहार की ऊर्जा उत्तेजना और दिशा उद्देश्य से है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, उपलब्धि प्रेरणा चुनौतियों का सामना करने और उत्कृष्टता के उच्च स्तर तक पहुंचने के लिए एक आवेग है। व्यक्तित्व और स्थितिजन्य (Situational) दोनों कारक उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करते हैं। एटर्किंसन और फेदर (1966) के अनुसार, "उपलब्धि के उद्देश्यों की कल्पना एक नवीनतम स्वभाव के रूप में की जाती है जो सिर्फ तभी प्रकट होती है जब व्यक्ति व्यक्तिगत उपलब्धि की भावना के लिए प्रदर्शन को महत्वपूर्ण मानता है।" इसी क्रम में फर्डीनांड होपे (1976) ने कहा है, व्यक्तियों की उपलब्धि की आवश्यकता अधिक सुदृढ़ होती है वह अपने आप में सुधार करने के लिए अपने ही कौशलों का प्रयोग करते हैं वे ऐसे कार्य को प्राथमिकता देते हैं जिनको करने में कुछ प्रयासों की आवश्यकता होती है परंतु यह कार्य ऐसे नहीं होने चाहिए जिनका संपादन असंभव हो। उपलब्धि प्राप्त करने वाले अपने लिए सामान्यता कुछ लक्ष्यों का निर्धारण सफलता के प्रतीक के रूप में करते हैं उच्च कोटि का कार्य करना चाहते हैं तथा दूसरों से सकारात्मक पुनर्बलन प्राप्त करने में सुख की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार उपलब्धि प्रेरणा को सक्षमता प्रासंगिक व्यवहार की ऊर्जा और दिशा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसका अर्थ -लक्ष्य की दिशा में प्रेरित होकर किए गए प्रयास से है। छात्रों के लक्ष्य की दिशा को संज्ञानात्मक शैली से व्यवस्थित एवं संसाधित किया जा सकता है। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सभी छात्रों का व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न होता है, जिसमें सभी छात्र अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग व्यवहार करते हैं। मनोवैज्ञानिकों द्वारा बहुत से ऐसे कार्य किए गए जिसमें व्यक्तित्व में पाई जाने वाली व्यक्तिगत भिन्नताओं को प्रत्यक्षीकरण में होने वाले

व्यक्तिगत विभिन्नताओ से जोड़ने का प्रयास किया गया। जिसके आधार पर संज्ञानात्मक शैलियों का प्रतिपादन किया गया, संज्ञानात्मक शैली में भिन्नता के आधार पर विद्यार्थी सूचनाओं को अलग-अलग तरह से संसाधित एवं संगठित कर सकते हैं। इसी विषय में ध्यान देने योग्य बात यह भी है, कि संज्ञानात्मक शैली संज्ञान या कौशल के स्तर पर बल नहीं डालती, अपितु यह तो मनोवृतियों और विभिन्न प्रकार के उपायों की ओर संकेत करती है जिसे छात्र अपने चिंतन में प्रयोग करता है। संज्ञानात्मक शैली यह बताती है कि छात्रों को किस तरह अपने पर्यावरण तथा स्वयं को पहचानना है, और स्वयं के पर्यावरण का किस प्रकार प्रत्यक्षीकरण करना है, किस प्रकार निर्णय लेना है, सोचना है, सीखना है समस्याओं का समाधान करना है, और मूल्यांकन करना है।

एलिज़ाबेथ पोंस-गार्सिया एट अल (2013) के अनुसार, "संज्ञानात्मक शैली शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति के सीखने या सिखाने के अभ्यस्त तरीके को संदर्भित करने के लिए किया जाता है।" इसी संदर्भ में किटर्न (2003) के अनुसार, "संज्ञानात्मक शैली तब प्रदर्शित होती है, जब दो व्यक्ति एक ही समस्या को अलग-अलग परिणामों के साथ हल करते हैं।" मनोवैज्ञानिकों द्वारा संज्ञानात्मक शैली के विभिन्न प्रकारों का वर्णन किया गया है, जिसमें सर्वप्रथम संज्ञानात्मक शैली का सिद्धांत विटकिन (1976) द्वारा दिया गया था। विटकिन ने संज्ञानात्मक शैली के दो प्रकार क्षेत्र स्वतंत्रता और क्षेत्र निर्भरता बताए। सागिव एट एल (2014) ने दो अन्य शैलियों यथा क्रमबद्धता शैली, तथा अंतर्बोध शैली की व्याख्या की थी।

यह शैलियाँ निम्न प्रकार है-

1. क्षेत्र स्वतंत्रता और निर्भरता शैली

एक स्वतंत्र क्षेत्र विद्यार्थी अपने लक्ष्य आकृति दिशा को पहचानने में कठिनाई महसूस नहीं करते हैं और वह वातावरण में विभिन्न इकाईयों को भिन्न-भिन्न करके पहचान करते हैं, इस प्रकार के छात्र आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और अपनी

इच्छाओं का सम्मान करने वाले होते हैं। इसके विपरीत क्षेत्र निर्भर छात्र इन कार्यों में कमजोर होते हैं यानि इन में विस्तृत सामाजिक कार्यों को विश्लेषणात्मक ढंग से करने की कमी होती है। इस प्रकार के छात्र अपने आवेगों को नियंत्रित करने में कमजोर होते हैं और कम सामाजिक और संवेदनशील होते हैं।

2. क्रमबद्धता शैली और अंतर्बोध शैली

क्रमबद्धता शैली के अंतर्गत वे छात्र आते हैं, जो किसी कार्य को तार्किक एवं संगत रूप से करते हैं और निर्णय लेने, समस्या समाधान करने, सीखने एवं चिंतन में क्रमिक होते हैं जबकि अंतर्बोध शैली अतर्कसंगत है। युंग ने अंतर्बोध शैली को अविवेकी प्रक्रिया अतर्कसंगत कहा है, क्योंकि इसमें छात्र वस्तुओं का तत्कालिक प्रत्यक्षीकरण करता है परंतु उसमें किसी प्रकार का तार्किक चिंतन शामिल नहीं होता है।

जीन पियाजे के अनुसार 4-7 वर्ष की अवधि तक छात्र अंतर्बोध अवधि में होते हैं, क्योंकि इस अवस्था में छात्र अंतर्बोध चिंतन करते हैं ना कि क्रमबद्ध चिंतन। इस प्रकार अंतर्बोध चिंतन में क्रमबद्ध् चिंतन का अभाव पाया जाता है क्योंकि छात्र किसी भी प्रक्रिया के नियम को तर्कपूर्ण ढंग से नहीं समझ पाते हैं फिर जैसे-जैसे छात्रों की आयु बढ़ने लगती है उसी क्रम में वह अतार्किक चिंतन से तार्किक चिंतन की ओर बढ़ते हैं इस प्रकार अंतर्बोध चिंतन क्रमबद्ध चिंतन का स्थान ले लेता है।

सरल शब्दों में संज्ञानात्मक शैली विद्यार्थीयों को सूचना को व्यवस्थित करने, संसाधित करने और सुसंगत दृष्टिकोण अपनाने के बारे में बताती है। इसलिए संज्ञानात्मक शैली का सम्बन्ध विद्यार्थियों की शैक्षणिक सत्यनिष्ठा से भी हो सकता है। शैक्षणिक सत्यनिष्ठा शब्द, डॉन मेककेवे (यूएसए) द्वारा गढा गया था, जिन्हें शैक्षणिक सत्यनिष्ठा के पिता के रूप में जाना जाता है। शैक्षणिक सत्यनिष्ठा के अंतर्गत नैतिक मूल्य सम्मिलित है जिसमें ईमानदारी, विश्वास, निष्पक्षता, सम्मान और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना शामिल है।

शैक्षणिक सत्यनिष्ठा नैतिकता की श्रेणी है, जिसके द्वारा शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित व्यक्ति उन मानकों पर चलते है जिनके द्वारा संस्थान प्रकाशन, शोध, शिक्षण और अन्य शैक्षणिक प्रयासों में गुणवत्ता को ईमानदारी के साथ सुनिश्चित किया जा सके। इंटरनेशनल सेंटर फॉर एकेडमिक इंटीग्रिटी (आईसीएफएआई) (2014) शैक्षणिक सत्यनिष्ठा को बुनियादी सिद्धांतों की एक श्रृंखला के रूप में मानता है, जो जीवन के सभी पहलुओं में सफलता की नींव है। शैक्षणिक सत्यनिष्ठा को हर शैक्षणिक प्रयास के लिए एक मौलिक गुण माना जाता है, जो किसी भी शिक्षण व सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है। यह उत्कृष्टता और सीखने के उच्चतम मानकों को प्राप्त करने पर केंद्रित है।

इंटरनेशनल सेंटर फॉर एकेडमिक इंटीग्रिटी (2014) के अनुसार, "शैक्षणिक सत्यनिष्ठा को लागू करने का अर्थ है शैक्षणिक कार्य से संबंधित किसी भी गतिविधि को ईमानदारी, सम्मान, विश्वास, निष्पक्षता, जिम्मेदारी, और साहस के साथ करना और कार्य विशेष रूप से कठिन होने पर भी किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी या बेईमानी से बचना।" शैक्षणिक सत्यनिष्ठा के लिए वर्तमान दृष्टिकोण को एक वैचारिक ढांचा की पेशकश करने वाले विचार प्रदान करते हैं लेकिन अभी भी छात्रों को विशिष्ट शैक्षणिक सत्यनिष्ठा व्यवहार को निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है जैसे सत्य बोलना और कार्यभार का पालन करना, अपने स्वयं के प्रयासों से कार्य को पूरा करना, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए सिर्फ स्वीकृत सामग्री के साथ परीक्षा में उत्तर प्रदान करना, दूसरों के काम का श्रेय देना, समूह कार्य के समय निष्पक्ष रुप से सहयोग करना आदि इसके द्वारा अध्ययन, अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण प्रक्रिया में छात्र, शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा उच्च गुणवत्ता लाने का प्रयास किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध समस्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का अध्ययन का प्रादुर्भाव शिक्षा व शिक्षण को प्रभावी बनाने व शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल एवं शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार करने के कारण हुआ है।

समस्या का प्रादुर्भाव और औचित्य

वर्तमान समय में समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का स्तर परिवर्तित हो रहा है। प्राचीन समय में शिक्षा पूर्ण रूप से शिक्षक केंद्रित थी, जिसमें छात्र पूर्ण रूप से शिक्षकों पर आश्रित थे। वर्तमान समय में शिक्षा का केंद्र शिक्षक ना होकर छात्र है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के अनुसार, शिक्षा पाठ्य केंद्रित न होकर छात्रों के संपूर्ण विकास पर ध्यान देने योग्य होनी चाहिए।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) ने यह भी सिफारिश की छात्रों को व्यक्तिगत अधिगम पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। वर्तमान समय में व्यक्तिगत पठन की आवश्यकता समय के साथ -साथ बढ़ती जा रही है। जिसमें छात्र औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ स्व अध्ययन की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। स्व अध्ययन न केवल छात्रों की रुचि को बढ़ाएगा, अपितु यह छात्रों को प्रेरित करने में भी अहम भूमिका अदा करेगा। स्व अध्ययन के द्वारा छात्रों में आंतरिक प्रेरणा बढ़ती है, जिससे छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन उत्कृष्ट हो सकेगा। लेकिन छात्र जो स्व विनियमित अधिगम करते हैं उनको यह स्व अध्ययन ईमानदारी, विश्वास, निष्पक्षता, तथा जिम्मेदारी के साथ करने की आवश्यकता है, तभी उनका शैक्षिक प्रदर्शन उत्कृष्ट हो सकता है तथा वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसित हो सकते हैं।

छात्रों को लक्ष्यों की ओर उन्मुख होने में उनकी आन्तरिक प्रेरणा उनको उपलब्धि की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह आंतरिक प्रेरणा सभी शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की भिन्न -भिन्न हो सकती हैं जो शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में संज्ञानात्मक शैली के माध्यम से विभिन्न तरीकों से कार्य करने में सहायता प्रदान कर सकती है। जिससे सभी विद्यार्थियों का सीखने व कार्य करने का तरीका अलग प्रस्तुत होगा और छात्र एक दूसरे को देख कुछ सीखने की नई रणनीतियां अपना सकते हैं। इस प्रकार विद्यार्थियों के द्वारा नवीन रणनीतियों को अपनाने का प्रभाव उनके स्व विनियमित अधिगम कौशल तथा शैक्षिक प्रदर्शन पर देखा जा सकता है।

इन सभी चरों के सन्दर्भ में पूर्व में भी अध्ययन हो चुके हैं जो निम्न प्रकार हैं –

तालिका 1 पूर्व सन्दर्भ अध्ययन

क्र. सं.	शोधकर्ता एंव वर्ष	शोध का विषय	निष्कर्ष
1.	हेनिंग, एम.ए., और शुलरुफ, बी. (2011)	प्रेरक विश्वास और स्व विनियमित शिक्षा के साथ विश्वविद्यालयों के छात्रों के मध्य शैक्षिक प्रदर्शन के संबंध की जांच।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि प्रेरक विश्वास दृढ़ता से स्व विनियमित सीखने से जुड़े थे।
2.	प्रयेक्ति (2015)	छात्रो में शिक्षक पेशेवर क्षमता प्राप्त करने के लिए स्व विनियमित अधिगम और प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि स्व विनियमित सीखने का पेशेवर क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
3.	जूपो., एच. को., वाई. (2019)	प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में स्व विनियमित सीखने को प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षकों में स्व विनियमन सीखने के प्रति जागरूक करने के लिए अध्ययन	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि छ: महीने की अवधि में शिक्षकों ने अपने स्व नियमन सीखने में वृद्धि की और छात्रों ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई |
4.	माइकल्स्की टी (2021)	पूर्व सेवा और सेवाकालीन शिक्षकों की स्व विनियमित अधिगम रणनीतियों के लिए निर्देशन का अध्ययन	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि पूर्व सेवा और सेवाकालीन शिक्षक एस. आर. एल. के विशिष्ट शिक्षकों से निर्देशन लेने में विफल रहे थे।
5.	सिलीकर एस.ए., और क्लर्क, जे.टी. (1997)	बालक और बालिकाओं के हाई स्कूल के शैक्षिक प्रदर्शन पर पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि हाई स्कूल के 123 विद्यार्थियों को लिया गया जो फुटबॉल खेलते थे परिणाम में पाया गया कि इन विद्यार्थियों का जी.पी.ए. साधारण विद्यार्थियों जो फुटबॉल नहीं खेलते थे उनकी तुलना में अधिक अच्छा आया था।
6.	कॉकली, एट अल (2003)	आत्म अवधारणा और शैक्षिक प्रदर्शन में संबंध की जांच का अध्ययन।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि शैक्षिक अवधारणा तथा आत्म अवधारणा छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। आत्म सम्मान का शैक्षिक आत्म अवधारणा के साथ कमजोर संबंध पाया गया है।

7.	एंगलंड, एम. एम., लकनर, ए.ई., व्हेली, जी.जे.एल., और एगलैंड, बी. (2004)	माता पिता के व्यवहार अपेक्षाओं तथा छात्रों की शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य संबंध की जांच।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि माता-पिता के व्यवहार अपेक्षाओं तथा उनकी सहभागिता का उनकी शैक्षिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
8.	रेणुका देवी एमआर एट अल। (2013)	स्नातक स्तर के छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर परामर्श के प्रभाव का अध्ययन	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि कॉलेजों में परामर्श सेवाएं छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करने में प्रभावी रही और परामर्श से प्राप्त रचनात्मक समर्थन से शैक्षिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा था।
9.	जायसवाल, संदीप कुमार (2019)	माध्यमिक विद्यालयों की छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में उनके माता-पिता की भागीदारी उनकी आत्म अवधारणा के संबंध में अध्ययन।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि माता-पिता के व्यवसायिक कार्य, आत्म अवधारणा से छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है, और जिन छात्रों के माता-पिता अधिक पढ़े लिखे होते हैं उनके बच्चों का शैक्षिक प्रदर्शन अधिक उत्कृष्ट होता है।
10.	क्वांग टी एट अल (2010)	हांगकांग में शैक्षणिक सत्यनिष्ठाके बारे में छात्रों और संकायो की धारणा।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि छात्र सामान्य तौर पर ग्रेड प्वाइंट और शिक्षकों के शैक्षणिक सत्यनिष्ठाकी अस्पष्ट निर्देशों के कारण कदाचार करते थे।
11.	करीम और घवम (2011)	विश्वविद्यालय के छात्रों में आत्म नियंत्रण आत्म प्रभावशीलता के संबंध में शैक्षणिक धोखाधड़ी की प्रवृत्ति की जांच।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि आत्म नियंत्रण, आत्म प्रभावशीलता और शैक्षणिक धोखाधड़ी के मध्य नकारात्मक संबंध था।
12.	ग्युरेरो-डिब एट अल (2020)	कार्यस्थल के नैतिक व्यवहार पर शैक्षणिक अखण्डता का प्रभाव	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि जो विद्यार्थी शैक्षणिक अखण्डता के उल्लंघन के खिलाफ शिकायत करते है अन्य शैक्षणिक कदाचार में शामिल नहीं होते तथा कदाचार के प्रति शिकायत करते हैं।

13.	सुरलगा एट अल (2021)	शैक्षणिक सत्यनिष्ठा पर लक्ष्य अभिविन्यास के प्रभाव की मध्यस्थता में नैतिक स्व विनियमन की भूमिका	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि छात्रों के शैक्षणिक जीवन में नैतिक स्व विनियमन को शामिल करने की आवश्यकता है।
14.	वर्मा, मृदुल कुमार (2003)	माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थीयों की शैक्षणिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं था, केवल बुद्धि में अंतर था।
15.	प्रेमा मारिया, जे. (2009)	उच्च माध्यमिक छात्रों की उपलब्धि के सम्बन्ध में उनकी उपलब्धि प्रेरणा, आत्म अवधारणा और सामाजिक धारणा का अध्ययन।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि छात्रों की उपलब्धि को उत्कृष्ट करने में उपलब्धि प्रेरणा, आत्म अवधारणा और सामाजिक धारणा बहुत महत्वपूर्ण कारक है।
16.	शेखर और देवी (2012)	स्नातक स्तर पर विज्ञान और कला के साथ-साथ लिंग अंतर के विषय में उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन करना।	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि बालक और बालिकाओं के मध्य उपलब्धि प्रेरणा में अंतर था। छात्रों की तुलना में छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा अधिक थी और कला स्ट्रीम की तुलना में विज्ञान स्ट्रीम की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा काफी अधिक थी।
17.	जमानी एट अल (2014)	मलेशिया में स्वतंत्रता से पहले और बाद की पीढ़ी लचीलापन और संज्ञानात्मक शैली	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ियों के बीच संज्ञानात्मक शैली में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। लेकिन लचीलापन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।
18.	जनतान (2014)	प्राथमिक विद्यालय में गणितीय उपलब्धि के साथ छात्रों की संज्ञानात्मक शैली (क्षेत्र निर्भर और क्षेत्र स्वतंत्र संज्ञानात्मक शैली) के बीच संबंध	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि विद्यालयों में लड़कों और लड़कियों के बीच संज्ञानात्मक शैलियों में महत्वपूर्ण अंतर था तथा छात्रों की संज्ञानात्मक शैलियों और उनकी गणित की उपलब्धि के बीच कम सकारात्मक संबंध था।

19.	जेना (2013)	ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उनके लिंग और धारा के संबंध में संज्ञानात्मक शैली	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि व्यवस्थित संज्ञानात्मक शैली के साथ-साथ सहज ज्ञान युक्त शैली पर पुरुष और महिला स्नातक छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।
20.	रेड्डी एम (2013)	प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक की संज्ञानात्मक शैली	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ, कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में लिंग भिन्नता के कारण संज्ञानात्मक शैली में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जबकि शिक्षकों की संज्ञानात्मक शैली का उम्र में भिन्नता के साथ-साथ स्थानीय भिन्नता के कारण महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

शोध से संबंधित चरों का साहित्यिक अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात हुआ, कि स्व विनियमित अधिगम कौशल, शैक्षिक प्रदर्शन, शैक्षणिक अखंडता, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली पर एक साथ कोई भी अध्ययन नहीं किया गया है। इसलिए शोधकर्ता के मन में यह प्रश्न आया, कि इन सभी चरों का अध्ययन एक साथ करने पर क्या निष्कर्ष आएगा। वह निष्कर्ष शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों तथा समाज के लिए लाभदायक होगा या नहीं। अत: शोधार्थी ने शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का अध्ययन देखने के लिए इस समस्या का चयन किया।

शोध प्रश्न

शोधार्थी के मन में अग्रलिखित शोध प्रश्न उत्पन्न हुए जिनका उत्तर वर्तमान अध्ययन के द्वारा प्राप्त हो सकेगा -

1. क्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा का प्रभाव पड़ता है?

2. क्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन पर उपलब्धि प्रेरणा का प्रभाव पड़ता है?

3. क्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन पर संज्ञानात्मक शैली का प्रभाव पड़ता है?

समस्या कथन

उपर्युक्त शोध प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्न समस्या का चयन किया गया-

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का अध्ययन।

Impact of Academic Integrity, Achievement Motivation and Cognitive Style on Self-regulated Learning Skill and Academic Performance of the Pupil-teachers.

समस्या में प्रयोग शब्दों का परिभाषीकरण

1. स्व विनियमित अधिगम कौशल (Self-regulated Learning Skill)

According to Pintrich (2000), "Self-regulated learning is - an active, constructive process whereby learners set goals for their learning and then attempt to monitor, regulate, and control their cognition, motivation, and behavior, guided and constrained by their goals and the contextual features in the environment.

सैद्धांतिक परिभाषा –

पिंट्रिच (2000) के अनुसार, "स्व-विनियमित अधिगम एक सक्रिय, रचनात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षार्थी अपने सीखने के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं, फिर अपने लक्ष्यों और पर्यावरण में प्रासंगिक विशेषताओं द्वारा निर्देशित होकर अपने ज्ञान, प्रेरणा और व्यवहार की स्व-निगरानी, और नियंत्रण करने का प्रयास करते हैं।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत अध्ययन में स्व विनियमित अधिगम कौशल ऐसा कौशल है, जिसमें शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा स्वयं के सीखने, व्यवहार को नियंत्रित करने और स्व मूल्यांकन करने का कौशल सम्मिलित है।

2. शैक्षिक प्रदर्शन (Academic Performance)

According to Martha (2009), "Academic Performance of students is defined by a student's performance in an examination, tests, or in a course work."

सैद्धांतिक परिभाषा - मारथा (2009) के अनुसार, "छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन को परीक्षा, परीक्षण और पाठ्यक्रम कार्य में छात्र के प्रदर्शन से परिभाषित किया जाता है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक प्रदर्शन, शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न शैक्षणिक विषयों में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि की माप है जिसे उनके सेमेस्टर अंत के समय में प्राप्त किया जा सकता है।

3. शैक्षणिक सत्यनिष्ठा (Academic Integrity)

According to Chesney (2009), "Academic Integrity focuses on the breach of the ethical standard, which materialize in incidents of plagiarism and cheating – the most widely practiced forms of dishonest behaviour on the university level."

सैद्धांतिक परिभाषा - चेसनी (2009) के अनुसार, "शैक्षणिक सत्यनिष्ठा नैतिक मानक के उल्लंघन पर ध्यान केंद्रित करती है, जो साहित्यिक चोरी और धोखाधड़ी की घटनाओं को रोकने के लिए अमल में आती है - विश्वविद्यालय स्तर पर यह बेईमानी सबसे व्यापक रूप में पाई जाती है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षणिक सत्यनिष्ठा का अर्थ है, शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किए जाने वाले सभी क्रियाकलापो में ईमानदारी, विश्वास, निष्पक्षता, सम्मान और जिम्मेदारी के मूल्यों के साथ कार्य करना।

4. उपलब्धि प्रेरणा (Achievement Motivation)

According to Heckhausen (1967), "Achievement Motivation can be defined as the striving to increase

or to keep as high as possible, one's own capabilities in all activities in which a standard of excellence is thought to apply and where the execution of such activities can, therefore either succeed or fail."

सैद्धांतिक परिभाषा - हेकहौसेन (1967), के अनुसार, "उपलब्धि प्रेरणा को सभी गतिविधियों में अपनी क्षमताओं को बढ़ाने या यथासंभव उच्च रखने के प्रयास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें उत्कृष्टता के एक मानक को लागू करने के लिए सोचा जाता है।

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत अध्ययन में उपलब्धि प्रेरणा का अर्थ शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपनी पूर्ण क्षमता व ऊर्जा का प्रयोग करके किसी निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना है।

5. संज्ञानात्मक शैली (Cognitive Style)

Tennant (1988) defined Cognitive Styles as "An individual's characteristic and consistent approach to organizing and processing information"

सैद्धांतिक परिभाषा - टेनेंट (1988) के अनुसार, "संज्ञानात्मक शैलियों को सूचना को व्यवस्थित और संसाधित करने के लिए एक व्यक्ति की विशेषता और सुसंगत दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत अध्ययन में संज्ञानात्मक शैली, विद्यार्थियों को सूचना को व्यवस्थित करने, संसाधित करने और सुसंगत दृष्टिकोण अपनाना सिखाती है |

अध्ययन के उद्देश्य-

- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर उपलब्धि प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उपलब्धि प्रेरणा की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक अखंडता, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर उपलब्धि प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उपलब्धि प्रेरणा की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना -

- **Ho1** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho2** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर उपलब्धि प्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho3** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर संज्ञानात्मक शैली का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho4** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उपलब्धि प्रेरणा की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho5** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho6** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho7** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के स्व विनियमित अधिगम कौशल पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho8** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho9** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर उपलब्धि प्रेरणा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho10** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर संज्ञानात्मक शैली का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

- **Ho11** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उपलब्धि प्रेरणा की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho12** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho13** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- **Ho14** शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की अंत:क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अध्ययन के चर-

वर्तमान शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा चयनित चर इस प्रकार हैं -

स्वतंत्र चर- शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा, संज्ञानात्मक शैली ।

आश्रित चर- स्व विनियमित अधिगम कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन।

अनुसंधान विधि-

वर्तमान शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

न्यादर्श का चयन- प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श चयन की प्रक्रिया इस प्रकार है -

- प्रस्तुत अध्ययन में सोद्देश्य विधि द्वारा दयालबाग शिक्षण संस्थान का चयन किया जायेगा।
- प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम का चयन सोद्देश्य विधि द्वारा किया जायेगा।

- न्यादर्श इकाइयों का चयन - कुल 400 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया जायेगा।

प्रस्तुत अध्ययन में न्यायदर्श की प्रक्रिया इस प्रकार है –

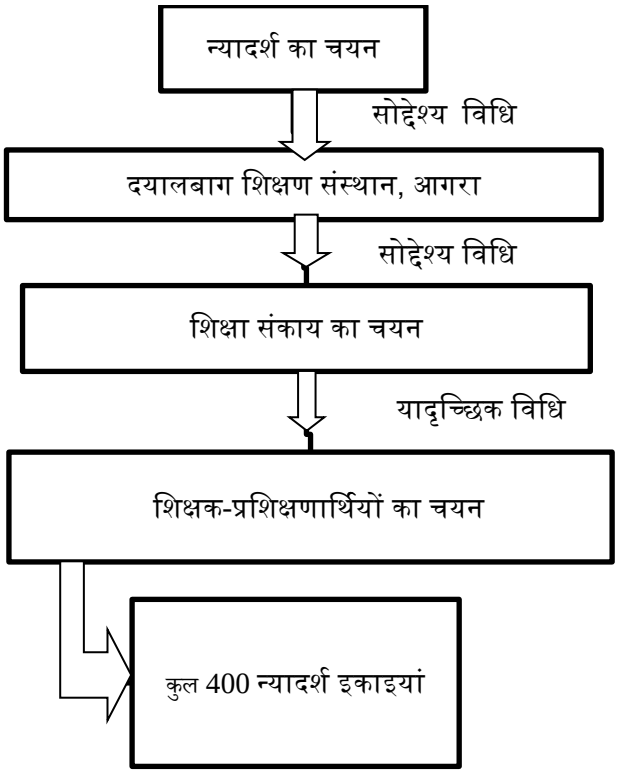

आरेख संख्या **1,** न्यादर्श का चयन

शोध उपकरण- प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।

1. स्व विनियमित अधिगम कौशल के मापन के लिए मधु गुप्ता एवं डिंपल मेहतानी (2017) द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।
2. शैक्षिक प्रदर्शन के मापन के लिए शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के समग्र प्राप्तांको का प्रयोग किया जाएगा।
3. शैक्षणिक सत्यनिष्ठा के मापन के लिए स्वनिर्मित शोध उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।
4. उपलब्धि प्रेरणा के मापन के लिए ओपी मिश्रा और प्रो. एस के श्रीवास्तव (2019) द्वारा निर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।

5. संज्ञानात्मक शैली के लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा (2018) द्वारा निर्मित शोध उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

वर्णनात्मक - मध्यमान, मानक विचलन, रेखा-चित्रीय

अनुमानिक - त्रि-मार्गी प्रसरण विश्लेषण

समस्या का परिसीमांकन - प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिसीमा निर्धारित की गई है –

1. प्रस्तुत अध्ययन दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा (उत्तर प्रदेश) तक सीमित रहेगा।

2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल बी.एड. के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया जाएगा।

3. प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत केवल 400 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया जाएगा।

शोध अध्ययन की उपादेयता

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष के द्वारा शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को उन कारकों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सकेगी, जिससे वह स्व विनियमित अधिगम कौशल के द्वारा अपने अधिगम का उचित प्रकार प्रबंधन कर सकेंगे।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष के माध्यम से शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को यह जानने में मदद मिलेगी, कि शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली का प्रभाव दृढ़ता से उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर पड़ता है, या नहीं जिससे वह अपने शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार कर सकेंगे।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष के माध्यम से स्व विनियमित अधिगम कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन को उत्कृष्ट करने में शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, उपलब्धि प्रेरणा और संज्ञानात्मक शैली की भूमिका के विषय में जान सकेंगे।
- प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के माध्यम से शिक्षक-प्रशिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारकों के विषय में जान सकेंगे।

- प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के माध्यम से शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबन्धित प्रबंधन ऐसी गतिविधियों का आयोजन कर सकेंग, जो शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन व स्व विनियमित अधिगम कौशल के विकास में सहायक कारकों का विकास कर सकेंगे।

संदर्भ

Atkinson, J. W. (1966). Motivational Determinants of Risk-Taking Behavior. In J. W. Atkinson, & N. T. Feather (Eds.), A Theory of Achievement Motivation (pp. 11-29). New York, NY: John Wiley & Son.

https://www.scirp.org/(S(czeh2tfqyw2orz553k1w0r45))/reference/ReferencesPapers.aspx?ReferenceID=1887056

Bell, A. (2016). GoodTherapy.org.

https://www.goodtherapy.org/blog/what-is-self-regulation-why-is-it-so-important-0928165

Bandura, A. (1965). *Journal of Personality and Social Psychology*, Vol.1, No.6, (accessed from uky.edu). http://www.uky.edu/~eushe2/BanduraPubs/Bandura1965JPSP.pdf

Chesney, T. (2009). "Academic Integrity in the Twenty-First Century: A Teaching and Learning Imperative." The Review of Higher Education 32 (4): 544–545. https://doi.org/10.1353/rhe.0.0088

Cockley, et al. (2003). What do we know about the motivation of African American students? Challenging the anti-intellectual myth. Harvard Education, Review. 73, 4, pp.524-558. 10.17763/haer.73.4.3618644850123376

De Maio, C., K. Dixon, and S. Yeo. (2020). "Responding to Student Plagiarism in Western Australian Universities: The Disconnect between Policy and Academic Staff." *Journal of Higher Education Policy and Management* 42 (1): 102–116. https://doi.org/10.1080/1360080X.2019.1662927

Devi MR, Devaki PR, Madhanika M. & Saikumar P. (2013). The Effect of Counselling on the Academic Performance of College Students. *Journal of Clinical and Diagnostic Research*., 7(6): 1086-1088. 10.7860/JCDR/2013/5247.3054

Englund, M. M., Luckner, A. E., Whaley, G. J. L., & Egeland, B. (2004). Children's achievement in early elementary school: longitudinal effects of parental involvement, expectations, and quality of

assistance. *Journal of Educational Psychology*, 96(4), 723–730. https://doi.org/10.1037/0022-0663.96.4.723

Guerrero-Dib, J.G., Portales, L. & Heredia-Escorza, Y. (2020). Impact of academic integrity on workplace ethical behaviour. *International Journal of Education Integrity* 16, 2. https://doi.org/10.1007/s40979-020-0051-3

Heckhausen, H. (1967). The anatomy of achievement motivation. New York: Academic Press. thork.people.uic.edu/fair/competence2020.pdf

Henning, M. A., & Shulruf, B. (2011). Academic achievement: Changes in motivational beliefs and self-regulated learning strategies overtime. *Psychologia,* 54(3), 135 144. https://doi.org/10.2117/psysoc.2011.135.

Hoppe, F. (1976). Success and failure. In 1. De Rivera (Ed.), Field theory as human-science (pp. 324-422). *New York: Gardner Press.* (Original work published 1931)

ICAI (International Center for Academic Integrity). (2014). Fundamentals Value Project: Project Overview. http://www.academicintegrity.org/icai/resources-2.php. [Google Scholar]

Jaiswal, K.S. (2019). A study of academic performance and academic self concept of secondary school students in relation to their perception and expectation of parental involvement. http://hdl.handle.net/10603/283620

Jantan, H., and Ramlah, B. (2014). Relationship between students' cognitive style (field-dependent and field–independent cognitive styles) with their mathematic achievement in primary school. *International Journal of Humanities Social Sciences and Education*, 1(10), 88-93. https://www.arcjournals.org/pdfs/ijhsse/v1-i10/13.pdf

Jena, P. C. (2013). Cognitive styles of rural senior secondary school students in relation to their gender and stream. *International Journal of Education and Psychological Research* (IJEPR), 2(4), 37-44

Karim, S. and Ghavam, E. (2011). The Relationship between Self-control, Self-effectiveness, Academic Performance and Tendency towards Academic Cheating: A Case Report of a University Survey in Iran. *Malaysian Journal of Distance Education* 13(2), 1-8. http://mjde.usm.my/vol13_2_2011/mjde13_2_1.pdf

Kirton, M.J. (2003). Adaption-Innovation: In the Context of Diversity and Change. Adaption-Innovation: In the Context of Diversity and Change. 1-391. https://doi.org/10.4324/9780203695005

Kwong, T., Ng, H., Mark, K. and Wong, E. (2010). "Students' and faculty's perception of academic integrity in Hong Kong", Campus-Wide Information Systems, Vol. 27 No. 5, pp. 341-355. https://doi.org/10.1108/10650741011087766

Macfarlane, B., J. Zhang, and A. Pun. (2014). "Academic Integrity: A Review of the Literature." Studies in Higher Education 39 (2): 339–358. https://doi.org/10.1080/03075079.2012.709495

Martha, k. (2009). Factors affecting academic performance of undergraduate students at uganda christian university. http://news2.mak.ac.ug/documents/Makfiles/theses/Kyoshaba%20Martha.pdf

Maria, J. (2009). A study of achievement motivation self_concept and social perception of higher secondary students in relation to their achievement. http://hdl.handle.net/10603/134053

Michalsky, T. (2021). Preservice and Inservice Teachers' Noticing of Explicit Instruction for Self-Regulated Learning Strategies. *Front. Psychol*. 12:630197. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2021.630197

Narad, Anshu., & Abdullah, B. (2016). Academic Performance of Senior Secondary School Students: Influence of Parental Encouragement and School Environment http://dx.doi.org/10.21659/rupkatha.v8n2.02

Narad, Anshu & Abdullah, Bilkees. (2016). Academic Performance of Senior Secondary School Students: Influence of Parental Encouragement and School Environment. *Rupkatha Journal on Interdisciplinary Studies in Humanities*. 8. 12.

10.21659/rupkatha.v8n2.02.

NCF. (2005). "NCF2005" (PDF). Retrieved 24 September 2015. https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf

Pal, D. S. (2007). Purvi Uttar Pradesh ke madhyamik star par vidyarthiyon ke shaikshik nishpadan ke vikas mein unki samajik aarthik sthiti aakanksha star Aur ruchi ke prabhav ka ek Adhyayan. http://hdl.handle.net/10603/182605

Pintrich, P. R., & de Groot, E. V. (1990). Motivational and self-regulated learning components of classroom academic performance. *Journal of Educational Psychology*, *82*(1), 33–40. https://doi.org/10.1037/0022-0663.82.1.33

Pintrich, P. (2000). “The role of goal orientation in self-regulated learning, ” in Handbook of Self-Regulation, eds M. Boekaerts, P. R. Pintrich, and M. Zeidner (San Diego, CA: Academic Press, 451–502.

Prayekti.(2015).Effect of Self-Regulated Learning and Motivation to Achieve against Teacher Professional Capability for Student S1 PGSD of Science Field Compared with Regular Student S1 PGSD at UPBJJ. *Serang Journal of Education and Practice*, v6 n36 p47-55. https://eric.ed.gov/?id=EJ1086515

Ponce-Garcia, E. & Kennison, S. (2013). Cognitive Style. Cross Cultural Encyclopedia. https://doi.org/10.1002/9781118339893.wbeccp081

Rajpoot Kumar Singh, V. (2012). Uchchatar madhyamik star ke vidyarthiyon ki shaikshik uplabdhi par vyaktigat moolyon evam vyavsayik aakankshaon ka prabhav.
http://hdl.handle.net/10603/179728

Reddy, M. (2013). Cognitive styles of primary school teachers. *International Journal of Scientific Research*, 2(7), 16-18. https://www.worldwidejournals.com/international-journal-of-scientific-research-(IJSR)/article/cognitive-styles-of-primary-school-teachers/MTMwMQ==/?is=1&b1=169&k=43

Richardson, M., Abraham, C., & Bond, R. (2012). Psychological correlates of university students' academic performance: a systematic review and meta-analysis. *Psychological bulletin*, 138(2), 353–387.https://doi.org/10.1037/a0026838

Rono, R. (2013). factors affecting pupils’ performance in public primary schools at kenya certificate of primary education examination (kcpe) in emgwen division, nandi district, kenya http://erepository.uonbi.ac.ke/bitstream/handle/11295/52949/Rono_Factors%20affecting%20pupils%e2%80%99%20performance%20in%20public%20primary%20schools.pdf?sequence=3&isAllowed=y

Sagiv, L., Amit, A., Ein-Gar, D., & Arieli, S. (2014). Not all great minds think alike: systematic and intuitive cognitive styles. *Journal of personality*, 82(5), 402–417. https://doi.org/10.1111/jopy.12071

Shekhar, C., & Devi, R. (2012). Achievement Motivation across Gender and Different Academic Majors. *Journal of Educational and Developmental Psychology*, 2(2), 105-109. https://doi.org/10.5539/jedp.v2n2p105

Silliker, S. A., & Quirk, J. T. (1997). The Effect of Extracurricular Activity Participation on the Academic Performance of Male and Female High School Students. *The School Counselor*, 44(4), 288–293. http://www.jstor.org/stable/23897929

Singh, S. & Malik, Savita & Singh, Priya. (2016). Research Paper Factors Affecting Academic Performance of Students. *Indian Journal of Research Paripex*. researchgate.net/publication/301324970_Research_Paper_Factors_Affecting_Academic_Performance_of_Students

Suralaga, F. ., Azkiyah , S. N., Dhowi, B., Nisa , Y. F. ., & Rahmawati, Y. (2021). The role of moral self-regulation in mediating the effect of goal orientation on academic integrity. *Cypriot Journal of Educational Sciences*, 16(2), 902–915. https://doi.org/10.18844/cjes.v16i2.5720

Tenant, M. (1988). Psychology and adult learning. London: Routledge. *Sage journal.* https://doi.org/10.1177/074171369204200311

Verma, M.K. (2003). Madhyamik vidhyalayo ke vidhyarthio ki shaikshanik uplabdhi ka unki budhi, samayojan tatha uplabdhi prerna se sambandh. http://hdl.handle.net/10603/14909

Witkin., (1976). Cognitive Style as a Predictor of Achievement: A Multivariate Analysis. https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED248217.pdf

XuPo, H. Ko., Y.(2019).Enhancing teachers' knowledge of how to promote self-regulated learning in primary school students: A case study in Hong Kong. https://doi.org/10.1016/j.tate.2019.01.002

Zamani, Z.A., Nasir, R., Sulaiman, W.S.W., Khairudin, R., and Halime, F.(2014). Resilience and cognitive styles among pre and post-independence generations in Malaysia. *Procedia - Social and Behavioural Sciences*, 140, 145 – 149. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2014.04.400

Zimmerman, B. J. (2002). Becoming a Self-Regulated Learner: An Overview. Theory Into Practice, 41(2). http://www.jstor.org/stable/1477457

Website

- https://en.m.wikipedia.org/wiki/Self-regulation_theory
- https://normandean.com/tribute/details/3042/Donald-McCabe/obituary.html
- https://www.verywellmind.com/piagets-stages-of-cognitive-development-2795457
- https://academicintegrity.org/about/about-the-center